अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2019) **दिनांक :** 17.12.2019

समय : 3 घंटा **प्रथम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

तेरापंथ का इतिहास–80

प्र. 1 किन्हीं सोलह प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए– 16

आचार्य भिक्षु (कोई बारह प्रश्नों के उत्तर दें)

(क) तीर्थंकर भगवान पार्श्व कितने व कौन-कौन से याम का उपदेश देते थे?

(ख) भीखणजी ने दीक्षा से पूर्व परीषहों का दृढ़ता से सामना करने के लिए क्या परीक्षण किया?

(ग) जनमानस में भीखणजी के प्रति घृणा के भाव भरने के लिए उनकी तुलना किस-किससे की गयी?

(घ) आचार्य भिक्षु को महाराणा द्वारा उदयपुर से निष्कासन के समय किस श्रावक ने मुख्य भूमिका निभाई?

(ङ) किसी ने स्वामीजी से कहा–संसार में सच्चे साधु कौन और ढोंगी कौन? इसका समाधान देते हुए स्वामीजी ने क्या कहा?

(च) भगवान महावीर के कुल कितने शिष्य थे तथा उनमें से केवली कितने बने?

(छ) स्वामीजी ने पाली में प्रथम चातुर्मास कब किया?

(ज) किसी बहन ने कहा–मुझे तो तेरापंथियों को आहार देने का त्याग है। तब मुनि हेमराज जी ने उससे क्या कहा?

(झ) वे किसी व्यक्ति का नाम लेकर निन्दा नहीं करते। सूत्र न्याय से समुच्चय रूप से बतलाते हैं कि साधु को अमुक-अमुक कार्य नहीं कल्पता। यह कथन किसने किससे कहे?

(ञ) आचार्य भिक्षु ने अपने प्रिय शिष्य भारमल जी के अति आग्रह पर अन्तिम आहार में क्या ग्रहण किया?

(ट) स्वामीजी के चबूतरे के पुनर्निर्माण में विशेष सहयोगी कौन बने?

(ठ) भीखणजी दीक्षा से पूर्व किन-किन सम्प्रदायों के सम्पर्क में आए?

(ड) आचार्य भिक्षु ने अपना नांगला व झोलका किसे दिया?

(ढ) पुण्य की वांछा करने से किसका बन्ध होता है?

आचार्य श्री भारमल जी (कोई चार प्रश्नों का उत्तर दें)

(ण) आचार्य मुनि भारमल जी का जन्म कब व कहाँ हुआ?

(त) मुनि भारमल जी की किस तपस्या ने उनके स्वर्णमय व्यक्तित्व को निखार कर कुन्दन बना दिया?

(थ) आचार्य भिक्षु ने मुनि भारमल जी को स्वावलम्बी बनाने के लिए कौन सा त्याग किया?

(द) आचार्य भारमल जी के स. 1875 के कांकरोली चातुर्मास में कितने पौषध हुए?

(ध) 'कंखे गुणे जाव सरीभेउ' इस आगम वाणी का अर्थ लिखें।

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 10

आचार्य भिक्षु (किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) किसी ने कहा–मुनि को तार मात्र वस्त्र रखना भी नहीं कल्पता। जो परीषह सहने में असमर्थ होते हैं वो ही वस्त्र रखते हैं। आचार्य भिक्षु ने उनको तुलनात्मक समाधान क्या दिया?

(ख) कइयों की मान्यता थी कि विशिष्ट कारण में साधु अकल्पनीय आहार भी ले सकते हैं और इसमें अल्प पाप और बहु निर्जरा होती है। आचार्य भिक्षु ने इस मान्यता का खंडन करते हुए क्या कहा?

(ग) किसी ने कहा–साधु का भोजन करना अव्रत है। स्वामीजी ने इस मान्यता का स्पष्टीकरण कैसे किया?

आचार्य भारमलजी (कोई दो प्रश्नों के उत्तर दें)

(घ) आचार्य भारमल जी का स. 1869 का जयपुर चातुर्मास उपलब्धियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण कैसे बना?

(ङ) आचार्य भारमल जी ने आमेट के शंकाशील श्रावकों का संघ से विच्छेद किया। वह प्रसंग संक्षेप में लिखें।

(च) किशनगढ़ में शास्त्रार्थ के पश्चात् सूरिजी ने साधुओं की तुलना किस प्रकार की? संक्षेप में लिखें।

आचार्य भिक्षु

प्र. 3 किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 18

(क) आचार्य भिक्षु द्वारा रचित 'अनुकम्पा की चौपाई' के आधार पर सिद्ध करें कि स्वामीजी ने आचार शुद्धि पर जितना बल दिया, विचार शुद्धि पर भी उससे कम नहीं दिया।

(ख) जन उद्धारक के रूप में स्वामीजी के धर्म प्रचार का विवरण प्रस्तुत करें।

(ग) विगत किसे कहते हैं? स्वामीजी ने कितनी और कौन-कौन सी विगत लिखी? उल्लेख करें।

प्र. 4 सिद्ध करें कि दूसरा व्यक्ति परिश्रम कर लेने पर जो तत्व किसी के गले नहीं उतार पाता, स्वामी जी उसे सहज रूप से समझा देते थे। 15

अथवा

स्वामीजी के जीवन के संध्याकाल का वर्णन करें।

आचार्य भारमल जी

प्र. 5 आचार-संहिता पर टिप्पणी लिखें। 6

अथवा

आचार्य भारमल जी के संलेखना तप का उल्लेख करें।

प्र. 6 घटना प्रसंगों से सिद्ध करें कि आचार्य भारमल जी अनुभवी शासक के रूप में संघ को प्राप्त हुए थे। 15

अथवा

महाराणा द्वारा आचार्य भारमल जी का उदयपुर से निष्कासन पुनः निमंत्रण व संतों के सफल प्रवास का घटनाक्रम प्रस्तुत करें।

तेरापंथ प्रबोध–20

प्र. 7 कोई तीन पद्य की पूर्ति करें– 8

(क) एक हुवै.....स्वेच्छाचार हो।

(ख) 'नैसर्गिक वचन-सिद्धि' वाला पद्य।

(ग) 'भारी मर्यादा बांधी' गीत वाला पद्य।

(घ) 'पंच वचन शिरमाथे' कहावत वाला पद्य।

प्र. 8 कोई तीन पद्य अर्थ सहित लिखें– 12

(क) ''हे प्रभो! यह तेरापंथ'' वाला पद्य।

(ख) ''चत्तारी मंगल रो शरणो'' वाला पद्य।

(ग) ''प्रतिभा उत्पत्तियां'' वाला पद्य।

(घ) ''बादलियो आंखड़ल्यां बरस्यो'' गीत वाला पद्य।